-

प्रश्न :

निवेश का PPP मॉडल भारत की बुनियादी संरचना में निवेश का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। ढाँचागत क्षेत्र के लिये इसकी आवश्यकता और महत्त्व पर चर्चा करें।

10 Nov, 2017 सामान्य अध्ययन पेपर 3 अर्थव्यवस्था

उत्तर :

पीपीपी परियोजना का अर्थ है किसी भी परियोजना के लिये सरकार या उसकी किसी वैधानिक संस्था और निजी क्षेत्र के बीच हुआ लंबी अवधि का समझौता। इस समझौते के तहत शुल्क लेकर ढांचागत सेवा प्रदान की जाती है। इसमें आमतौर पर दोनों पक्ष मिलकर एक स्पेशल परपज व्हीकल (एसपीवी) गठित करते हैं, जो परियोजना पर अमल का काम करता है। दोनों पक्षों के बीच जिस समझौते पर हस्ताक्षर होते हैं, उसे मॉडल कंसेशन एग्रीमेंट कहा जाता है।

आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया ने जब गति पकड़ी, तब देश के ढाँचागत क्षेत्र में बदलाव आना शुरू हुआ और इस क्षेत्र में विकास के लिये सार्वजनिक निजी भागीदारी का निवेश मॉडल काफी लोकप्रिय बनकर उभरा है। आज अवसंरचना के कई महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों, जैसे- सड़क, रेल, नवीकरणीय ऊर्जा, बंदरगाह, हवाई-अड्डा, पाइपलाइन और शहरी ढाँचागत क्षेत्र आदि में निवेश के लिये पीपीपी मॉडल को बढ़ावा दिया जा रहा है।

लाभ-

- पीपीपी मॉडल अपनाने से परियोजनाएँ सही लागत पर और समय से पूरी हो जाती हैं।
- पीपीपी से काम समय से पूरा होने के कारण निर्धारित परियोजनाओं से होने वाली आय भी समय से शुरू हो जाती है, जिससे सरकार की आय में भी बढ़ोतरी होने लगती है।
- परियोजनाओं को पूरा करने में श्रम और पूंजी संसाधन की प्रोडक्टिविटी बढ़ाकर अर्थव्यवस्था की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
- पीपीपी मॉडल के तहत किये गए काम की गुणवत्ता सरकारी काम के मुकाबले अच्छी होती है और साथ ही काम अपने निर्धारित योजना के अनुसार होता है।

हालाँकि कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में पीपीपी परियोजनाओं से जुड़ी कुछ नकारात्मक प्रवृत्तियाँ भी हैं, जैसे- दोषपूर्ण रिस्क शेयरिंग, अयोग्य बिजिनेस मॉडल और वित्तीय अस्थिरता आदि, जिसकी वजह से निजी कंपनियाँ कॉन्ट्रैक्ट हासिल करने के बाद निवेश बाहर निकाल देती हैं। पीपीपी के किसी भी प्रोजेक्ट के लिये काफी हद तक निजी क्षेत्र, बैंक कर्ज़ पर निर्भर रहते हैं। बैंकों का अपना क्षेत्रवार लक्ष्य होता है, जिसके पूरा हो जाने के बाद पीपीपी प्रोजेक्ट के लिये कर्ज़ मिलना मुश्किल हो जाता है।

महत्त्व

सार्वजनिक परियोजनाओं में पीपीपी के होने से मुख्य फायदा यह होता है कि निजी कंपनियाँ डिज़ाइन, निर्माण और संचालन की उत्कृष्ट कार्यकुशलता सार्वजनिक सेवा के लिये लाती हैं। ऐसा तर्क दिया जाता है कि निजीकरण से परियोजना संचालन में ज्यादा कुशलता आती है जिससे परियोजना लागत में बचत और लाभ अधिकतम होता है।

पीपीपी मॉडल के पक्ष में एक प्रमुख दावा यह भी किया जाता है कि चूँकि इस मॉडल में निजी वित्तीय संसाधनों का उपयोग होता है जिससे परियोजना में सार्वजनिक संसाधन लगाने ही नहीं पड़ते हैं। ये बचे हुए सार्वजनिक संसाधन सरकार की दूसरी नीतिगत प्राथमिकताओं के लिये काम में लाए जा सकते हैं।

मेन्स प्रैक्टिस प्रश्न

$('#sendtoprogress').click(function(e){ var article=$('#article').val(); var title = $('#articletitle').val(); var url = "https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-899&/pnt"; $.ajax({ type: "POST", url: "https://www.drishtiias.com/hindi/articles/progress", data: 'article='+article+'&type=2&articletitle='+title+'&url='+encodeURIComponent(url), success: function(data){ if(data=='success'){ if($('.progresslist').length) { $('.progresslist').prepend('
'+title+' ');}else { $('.message').hide(); $('

- '+title+'

').insertAfter(".content .prog"); } $('#articlemsg').html('आर्टकिल को आपके प्रोग्रेस सेक्शन में जोड़ दिया गया है।'); $('.fixbtn.progress').toggleClass('open'); }else if(data=='already'){ $('#articlemsg').html('यह आर्टकिल आपके प्रोग्रेस सेक्शन में पहले से ही मौजूद है।'); }else if(data=='login'){ $('#articlemsg').html('आर्टकिल को प्रोग्रेस सेक्शन में जोड़ने के लिए लॉगनि करें।'); }else{ $('#articlemsg').html('ओह! कुछ गलत हो गया है। कृपया पुनः प्रयास करें।'); } }, error: function(error,errortype,errorstatus){ alert(errortype); } }); }); $('#sendtobookmark').click(function(e){ var article=$('#article').val(); var title = $('#articletitle').val(); var url = "https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-899&/pnt"; $.ajax({ type: "POST", url: "https://www.drishtiias.com/hindi//articles/progress", data: 'article='+article+'&type=1&articletitle='+title+'&url='+encodeURIComponent(url), success: function(data){ if(data=='success'){ if($('.bookmarklist').length) { $('.bookmarklist').prepend('
'+title+'
'); }else { $('.message').hide(); $('

- '+title+'

').insertAfter(".content .bookm"); } $('#articlemsg').html('यह आर्टकिल आपके बुकमार्क्स सेक्शन में जोड़ दिया गया है।'); $('.fixbtn.bookmark').toggleClass('open'); }else if(data=='already'){ $('#articlemsg').html('यह आर्टकिल आपके बुकमार्क्स सेक्शन में पहले से ही मौजूद है।'); }else if(data=='login'){ $('#sendtobookmark').addClass('popup'); //$('#articlemsg').html('Please login to send this article into progress.'); }else{ $('#articlemsg').html('ओह! कुछ गलत हो गया है। कृपया पुनः प्रयास करें।'); } }, error: function(error,errortype,errorstatus){ alert(errortype); } }); });

न्यूज़लेटर सदस्यता

सब्सक्राइब करें

एसएमएस अलर्ट

सब्सक्राइब करें

हमारे बारे में

- For 2nd/3rd/4th EMI - Pay Now
- 'दृष्टदि वज़िन' फाउंडेशन का परचिय
- दृष्टविेब स्टोर
- दृष्टमीडयिा
- प्रबंध नदिशक
- इंफ्रास्ट्रक्चर
- UPSC Content
- डसि्टेंस लर्नगि प्रोग्राम

हमसे जुड़ें

- संपर्क करें
- आपकी प्रतिक्रिया
- करियर

हमसे संपर्क करें

दृष्टि द विज़न फाउंडेशन
641, पहली मंजिल, डॉ. मुखर्जी नगर,
सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट के सामने ,
नई दिल्ली - 110009

दृष्टि द विज़न फाउंडेशन
सिविल लाइन्स, प्रयागराज (इलाहाबाद),
उत्तर प्रदेश - 211001,
फोन नंबर - 8448485518, 8750187501

1800-121-6260 / 011-47532596

कॉपीराइट © 2018-2022 'दृष्टि द विज़न' फाउंडेशन, इंडिया | सर्वाधिकार सुरक्षित | गोपनीयता नीति

```
function getCookie(name) { var match = document.cookie.match(RegExp('(?:^|;\\s*)' + name + '=([^;]*)')); return match ? match[1] : null; } if(getCookie('isPopupDisplayed')!=1) { $(document).ready(function(){ document.cookie = "isPopupDisplayed=1" // $('#myModal').css('display','block'); $('#img01').attr('src',$('#myImg').attr('src')); $('#img01').attr('style','cursor:pointer'); }); $('#img01').on('click',function(e){ window.location="https://www.drishtiias.com/hindi/online-course"; }); $('#popclose').on('click',function(e){ $('#myModal').css('display','none'); }); }
```

नोट्स देखने या बनाने के लिए कृपया लॉगिन या रजिस्टर करें|

नोट्स देखने या बनाने के लिए कृपया लॉगिन या रजिस्टर करें|

close

प्रोग्रेस सूची देखने के लिए कृपया लॉगिन या रजिस्टर करें|

close

आर्टकिल्स को बुकमार्क करने के लिए कृपया लॉगिन या रजिस्टर करें|

close

खोजें Close

```
$('#searchfrm').submit(function(e){ var search=$('#search').val(); location='https://www.drishtiias.com/hindi/search/'+search; e.preventDefault(); }); $(document).ready(function(){ $('.comin-soon').colorbox({innerWidth: 1100, innerHeight: 530}); if(screen.width
```

& N B S P ;

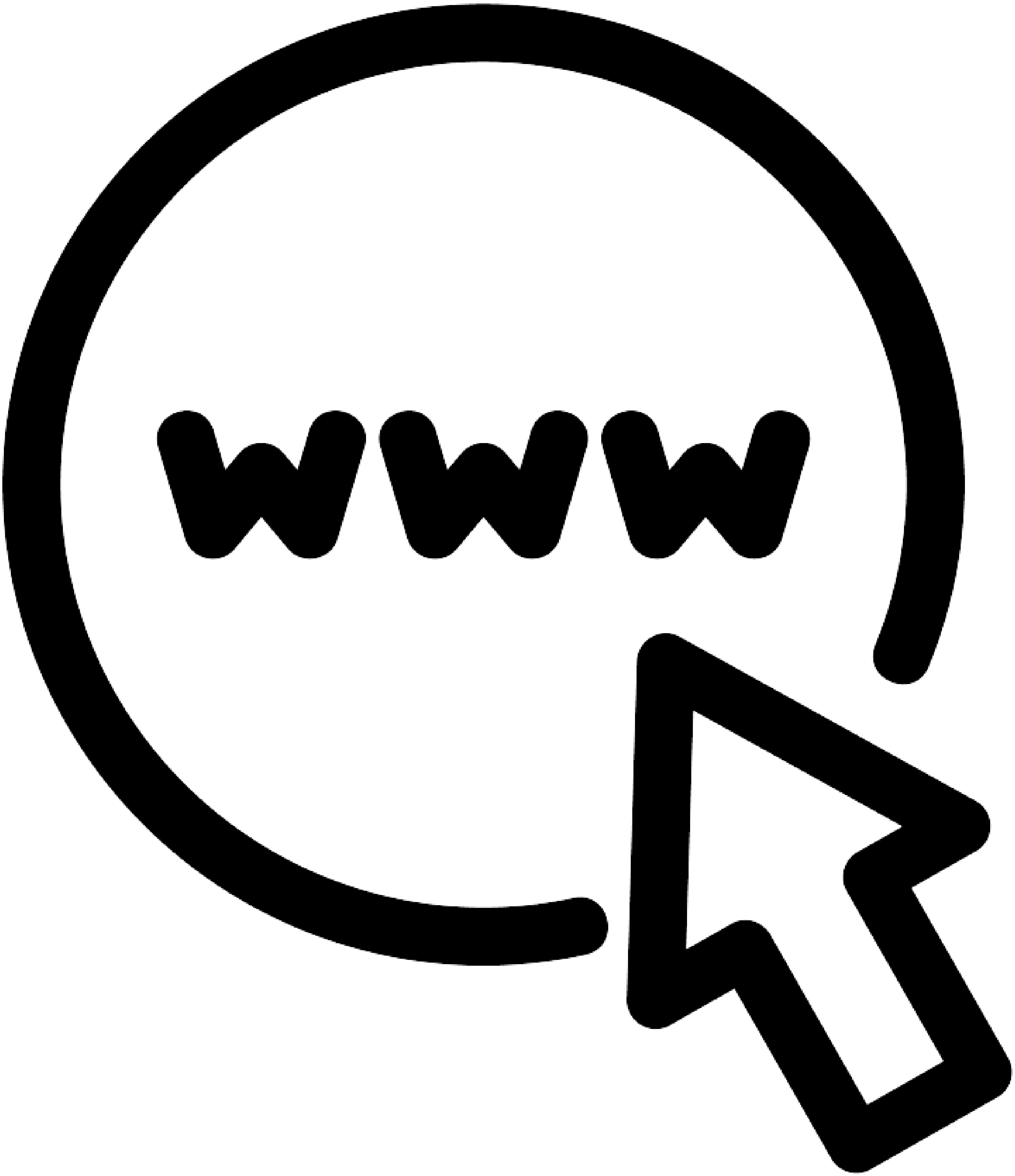
WWW


```
// For desktop - DRAGGABLE $('.float-plus').draggable(); $(".float-plus").css("position", "fixed"); $('.float-plus').click(function(){ show_social_float_icons(); }) var box = document.getElementById('float-plus'); $('.float-plus').mousedown(function(){ box.style.transition = "all 0s ease 0s"; }); $('.float-plus').mouseup(function(){ box.style.transition = "all 1s ease 0s"; var screen_width = screen.width; var screen_width = parseInt(screen_width, 10) var current_location = box.style.left; var current_location = parseInt(current_location, 10) var screen_middle = (screen_width/2); var xx = (screen_width*0.04); var x = (screen_width*0.009); if(current_location > screen_middle){ box.style.left = (screen_width-xx) + 'px'; } else { box.style.left = x + 'px'; } }); // For MOBILE TOUCH - DRAGGABLE var box = document.getElementById('float-plus'); box.addEventListener('touchstart', function(e) { // Nothing for now! }); box.addEventListener('touchmove', function(e) { box.style.transform = "translate(-50%, -50%)"; var touchLocation = e.targetTouches[0]; box.style.left = (touchLocation.pageX-window.scrollX) + 'px'; box.style.top = (touchLocation.pageY-window.scrollY) + 'px'; e.preventDefault(); }); box.addEventListener('touchend', function(e) { // Nothing for now! }); function remove_social_float_icons() { $(".float-fb").animate({ top: "-=8%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-fb" ).hide("slow"); },500); $(".float-tw").animate({ top: "-=16%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-tw" ).hide("slow"); },500); $(".float-rs").animate({ top: "-=24%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-rs" ).hide("slow"); },500); $(".float-ig").animate({ top: "-=32%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-ig" ).hide("slow"); },500); $(".float-pn").animate({ top: "-=40%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-pn" ).hide("slow"); },500); $(".float-wp").animate({ top: "-=48%", }, 500 ); setTimeout(function(){ $( ".float-wp" ).hide("slow"); },500); var width = (window.innerWidth > 0) ? window.innerWidth : screen.width; if(width 0) ? window.innerWidth : screen.width; if(width
```